# Lecture on Satellite Remote sensing (06 January 2020)

On 6 January 2020 Physics Department of GOVT.V.Y.T.P.G. Autonomous college, DURG organized an interactive session with **Dr. Atul Kumar Varma**, Head and Scientist G, Atmospheric and Oceanic Sciences group, Space Applications Centre, Indian Space Research Organization (ISRO) Ahmedabad, India.With his 32 years of research experience in the area of Satellite Remote Sensing of the oceans and atmosphere.

He talked about his focused areas such as: Satellite Remote sensing and





radiative transfer, Retrieval of Geophysical Parameter using satellite IR and Microwave observations, Remote sensing studies precipitation, Remote sensing studies on Ocean surface winds. He also gave us detailed description of RADAR and its Antenna. He also told us his current responsibility that is leading a team that has responsibility of providing algorithms for the retrieval of geophysical parameters from Indian satellite missions for oceans and atmosphere defining sensors for future missions, and developing methods for

generating climate data records. Stage Conduction has been done by M.Sc. (Physics) Pratiksha Tiwari. Student asked several queries about vikram lander failure and Head of department Dr. Purna Bose, Dr. Jagjeet Kaur Saluja, Dr. Anita Shukla Mrs. Siteshwari Chandrakar along with PG students were present.





Photos during Lecture

#### साइंस कॉलेज में रिमोट सेंसिंग पर व्याख्याताओं ने रखी अपनी बात, महत्वपूर्ण जानकारियां भी दी

## प्राकृतिक संसाधनों को बचाना मानव के लिए बडी चुनौती

जबना अंजरेश कार्यक्रम शुरू करते हुए नवामर प्रवृत्ति की और एक बाव ऐसा प्रमीवीत देश जा यो आज अंतरित विकास के दोत में विकसित देतों को जाकी कर ला है। संचर के का है। में भारत की बहानी प्रमणे के किन जाड़ी हैं। इसी बत की ध्यान में सबसे हुए योपनार को विरुक्तभ यहन रामानर जाता है। हमके सभ कीवी के उपरांत जन्मेल कार्य परिवल, दुर्ग में अदेशकृत्ये तथा पेतिकत्रामा (क्यान्द्रप्रामेग्यःसीसा(सुद्रासकेत) के को में एक अमारेंग नक्षतान का किया का एकता है। लायोजन किया तया।

विकार उन्होंने विभोड़ संबंधित भौगीतिक पूर्वक संबद्धाः।

में व अवर विद्वा चुंचकीय विकास - जामजी द्वारा कार्य करता है। समग्रे द्वारा वारतो औ देश कर मीसम मरिवर्गन स शकतात आदि वे तहे में प्रतंत्र होते ही प्रभावित होती को सराई वह तेता है शांव इसका उत्तर्वेश कुछ क्षेत्र में द्वापनी को गतिविषये को जन्म गंधी किय द्वारा उपबन्धे को पराप्रकारी के जरपन परिवर्णन की कवियों को कमने में कब जीतन में फैली अवन को अंतरिक्ष में मैप

ही. अधून सर्व ने सताय स्तोतन विवर्षे स्पेत एलकितम मेरर प्राती व्यवद्वित विकटम के द्वारा प्रकृतिक अध्यक्तात्मं आर्द्र में अकृत वर्ष समापने के लग को पेका जा सकता विद्यानिक ने विशेषक में तीर पर न्यास्थान । है। इस विद्या में सापी प्रधान किया जा रक्ष हैं। उसीने अपने 30 को से अधिक युक्त इंगाली (जीवेप्स), विरोट शोध अनुस्करी निरम्भ पूर्वेस स्थाप स्थितिक एक्स प्रकार स्थाप कर्या प्रकार स्थाप कर्या स्थाप स्था संबंधितप्रकलोळोची बरेमानित किया। उसीन करा कि ऐसेट सेमिन उसीने बनाव कि हमाँ देनिक नीवन



विश्वनाथ यदव नहाविद्यालय, दुर्ग में प्रेमोट संसिम्। यर व्यक्तवन देशे वरता, स्टाक व्यतमा-एमकर । ७ **-संदुनिया** 

real ranger years at fraction of न्हें प्रतिवासिको इत सिया गया।

काश्रम के जेरन प्रचार्य ही. अस्पर विश्व, हाँ, पूर्ण चीम, ही. हरूप पराची का अवर्षका कर की असन और पुष्पावका कार्यके जावीं। की सद्दा, ही, संस्था को बचान राग्ने हिए पुनीपूर्ण हीन असरे गोविधार्य को संस्था करता हिए ऐसीर सीसी विकास है। उससे वृद्धक, सीरियो पेडकर, ही असर के साथ बहुत आवासक है। उससे

जनित से जां क्यूमें संबेक्त हैं. प्रामी को पूछक अपने शंकानी जातीर कीर सनुता ने शत्य कि पूर्वी प्राचार्त हैं, अस्पासित ने प्रमानामीश का समाधान किया। धाववाट शासन पर भूति, तारा जेगल आदि इक्होंचेक एवकार्या उत्तीव विकेदन चौतिक साल । विकासीका अस्मादी साही विकेकियति वें ब्राव्हरिक संग्रापनी भी पहचार कर ओ बच्चने के लिए लगर स्थ्य चारिए।

उन्होरे बना कि प्रकृतिक संस्करने

प्रथम एवं पूर्वाय सेमेक्टर परिश्व सिंह लंबारा वर्ध संस्था में इटल-सार्का, विकारियों को प्रमाने में इटलवित्र प्रोडाम में अपनी करवर्तांका की वेदिन विकास न्बध्वत की सकतता ने लिए सरहते हुए पीरिक शास विभाग के इस उपल बी प्रतंत्र की तथ हो जन्म किया। इस गाउरामा के द्वार विद्यार्थिकों ने रियोट रेकिंग, राजार उसका से पार्थरात वर्ता सरावार्त जास्त्रसमें प्राप्त कर उसके अनुप्रवेशीय यो गेलना।

### रिमोट सेंसिंग से हमारा जीवन हुआ आसान और सुविधाजनक

## प्राकृतिक संसाधनों को बचाना हर किसी के लिए चुनौती

तरिभूमि ज्यूज १४। दुर्ग

बारत ने आजर्थ के बाद अपन अंतीक्ष कार्यक्रम शुरू करते हुए लगावार प्रनादि की और एकना प्रदेस प्रगतिशील देश बना जो आज

 मेठिक शास्त्र विभाग में निमोट लेकिन पर कार्यताला

अंतरिश विज्ञान के क्षेत्र में विकर्णनत देतों की बराबरी कर रहा है। संचार के इस दौर में भारत की कहानी इससे के विना अभूति है। इसी बात को ध्वान में रखते हुए सोववार को शासकीय विश्वनाय वादव वानस्कत विश्वनाय वादव वाजस्कत स्नातकोत्तर स्वराजसी महाविद्यालय में आईक्स्प्रमा तथा भौतिक शास



विभाग इस् रिमेट मॅमिंग (सुद्र) संबेदन) के बारे में आमेंकिर ज्याल्यन का आमीजन किया नवा जिसमें स्पेस एक्टीकेशन सेटर इसरे आग्रमणकर के डॉ. अनुन कर्य वैज्ञानिक ने पिशेषज्ञ के तीर प्र व्यक्तमा दिया। कार्यक्रमा की सुरुआत में डॉ. एवं बीस विभागानक ने मुक्तुच्छ द्वरा अविधि का स्वागत किया। संचालन करते हार

एसएसमी तृतीय सेमेस्टर मीतिक एमएसमी तृतीय सनस्य तास्त्र को प्रतिक्ष तिकते ने ठॉ. अहुल सम्बद्ध दिखा है वर्षों का सीक्षण परिचय दिया। ही अनुस्त पर्मा ने रिकोट सीक्षण भीगोलक बुचना प्रयाल भौगोसक युचना प्रणाली (जीपीएस), रिमोट मेसिन, राह्यर व उपाह संचार की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि रिमोट सेसिंग दूसक घटनाओं का अक्लोकन कर उसकी मांनविधियों की मंदियेन करना है।

इसका उपयोग कुछ क्षेत्र में कुछनों की बीतविधियों की जानने में भी विषा जाता है। इसके खाब कैमरे के उपयोग इसा उपवारों की महाचानी के रायमान परिवर्तन की हार्वियां बनाने तथा जंगल में फैसी आग को अंतरिक्ष में मैच किया या सकता है। अवारक्षं स स्वतं का वा सकता है। एसरामां प्रवतं एवं वृत्तेव सेमेस्टर मेरिक तथा समयन शास के विकासिने ने प्रता पुरुक्त अपने शंकारी का समाधान किया। अन्यवाद हारन प्रतिवा तिवारी ने श्रम्भवद् इतन प्राप्ता त्याच । किया।कार्यक्रम में तीतन प्राप्तार्थ ही अरान सिंह, ही पूर्व थेल, ही नामीत की सन्त्या ही अतिक शुक्रता, सीतेश्वते चंद्राकर, ही अगव सिंह सीहत बड़ी संख्या में हाज-साजाएं स्परिधात थे।

गर्ल्स कॉलेज में एक भारत, श्रेष्ट भारत क्लब गठित क्षेट्र सत्त्व क्षा का

स्थायक पर्य मेंडल अधिकार्त हैं. ऋब एक्ट्रम ये बताय कि एक मरन, बेया भरत वरण के अहारक जनभवका का दरिशंव हो मिलिन्द अस्तवासी रिजामध्यक्ष संगीतं तथा हो. योजेब्द विदाही दिसामध्यक्ष विभागतं तथे दिया गाव है। क्लब में निकारों, कर्मकरियों के साद ही 30 कांग्रार स्वस्ट मानेबीर की गर्व हैं। प्रावर्य ही सुमीन कहा निवारों से बक्व कि इस ग्रेस्स के अंतर्ग प्रदेश हैं। त्त्र पायर इत सुगान प्रकार साथा ने कारण का उने राजना के क्रांत्रका के उत्तर विकार के कारण प्रकार है। अर्थोंकर तथ्य इन्हाम के उच्च विकार स्थानकों के उस्तर करना ने सुनी के उन्होंकरों करना है। इन्हें स्थान में गुजरानी मात्र सीवार कि एन प्रविक्षण नक आर्थोंकर के तीन करने। उन्हाम पाय ने संस्कृत पर अर्थोंकर करोड़न अर्थोंकर विकार करों। सीवार अर्थोंकर के उन्हाम में मात्रकी के कारण के स्थान के प्रवास कर कर है। इन्हें मात्र कर प्रकार के स्थानकों के साथ के साथ अर्थोंकर कर है। इन्हें मात्र महाविक्षण के विश्वास कर बोजन के साथ अर्थावस्थाय स्थानित



16-Jan-Page 4

## रिमोट सेंसिंग से हमारा जीवन हुआ आसान और सुविधाजनक : डॉ. वर्मा

**बिटी रिपोर्टर** भिलाई

प्राकृतिक संसाधनों को जीपीएस से बचा सकते हैं : डॉ. सलुजा

के मुख्य वक्ता स्पेश एप्लीकेशन भूमि, जल जंगल आदि प्राकृतिक सेंटर इसरो से आए डॉ. अतुल वर्मा संसाधनों का क्षरण हो रहा है।

दूरस्य घटनाओं का अवलोकन कर चुनीतीपूर्ण होने के साथ बहुत उसकी गतिविधियों की जानकारी आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों देता है। यह बिह्युत चुंककीय

में रिमोट सेंसिंग पर हुई कार्यशाला कौर सल्जा ने कहा कि पृथ्वी पर ने जीपीएस, रिमोट खेंसेंग, रॉडार, उनकी पहचान कर उसको बचाने समाधान किया। इसमें प्राचार्य डॉ. उपग्रह संचार पर अपनी बातें रखीं। के लिए तत्पर रहना होगा। प्रकृतिक आरएन सिंह, डॉ. पूर्णा बोस, डॉ. उन्होंने कहा कि रिमोट सेंसिंग संसाधनों को बचाना हमारे लिए

उपयोग युद्ध क्षेत्र में दुश्मनों की है। ग्लोवल प्याइटिंग सिस्टम से लिए रिमोट सेंसिंग उपयोगी है।

साइंस कॉलेज के भौतिको विभाग अइंक्युएसी संयोजक डॉ. ज्याजीत को इससे में इंटर्नीशप में सहभागिता देने के लिए प्रेरित किया। व्याख्यान के बाद छात्र-छात्राओं ने सवाल पूछकर अपनी शंकाओं का अनिता शुक्ता, सीतेश्वरी चंद्राकर, डॉ. अजय सिंह, प्रतीक्षा तिवारी आदि उपस्थित रहे।

विकिरण बाहकों से बाम करता है। मतिविधियों को जानने के लिए करते। प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण को बादलों को ट्रैक कर मीसम परिवर्तन हैं। कैमरे के उपयोग से उपग्रहों और रोक सकते हैं। उन्होंने भविष्य में और चक्रवात आदि के शुरू होते. महासागरों के तापमान परिवर्तन की समुद्र और वायुमंडल से संबंधित ही प्रभावित क्षेत्रों को सतके कर छवियों को बनाते हैं। इससे जंगल तथ्यों को परिभावित किया। हमारे देता है। उन्होंने कहा कि सेंसर का में फैली आक को भी नाप सकते. दैनिक जीवन को आसान बनाने के